द्वितीय सेमेस्टर (एमए) हिन्दी

संस्कृत साहित्य का इतिहास

PAPER CC – 7

संस्कृत नाटक के विकास में कालिदास का योगदान

एक कवि और नाटककार के रूप में कालिदास विश्व साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकारों में परिगणित होते हैं। उनके तीन रूपक प्राप्त होते हैं :

1. मालविकाग्निमित्र 2. विक्रमोवर्शीय 3. अभिज्ञान शाकुंतल।

प्रथम दो 5 अंकों में और अंतिम 7 अंकों में निबद्ध है और इनका रचना क्रम भी यही बताया जाता है।

"मालविकाग्निमित्र" में शुंगवंशी राजा अग्निमित्र और विदर्भराज की पुत्री मालविका के प्रणय की कथा ही नाटक की कथावस्तु है। नाटक में राज–प्रासाद के षड्यंत्रों का सजीव चित्रण है। प्रेम–प्रपंच के अनोखे प्रसंगों, चुभते संवादों और सरस विनोद से यह नाटक परिपूर्ण है। विभिन्न घटनाओं का कुशल संघटन यहाँ दिखाई पड़ता है। प्रथम नाटक होने के बावजूद इसमें नाटकीय छठा खिल उठी है।

दूसरा रूपक है–"विक्रमोवर्शीय" जिसके नायक हैं पुरूरवस् जो अप्सरा उर्वशी को देखकर मुग्ध हो जाते हैं। इन दोनों की प्रेमकथा को सधे हुए कौशल के साथ कालिदास ने एक नाटक में विन्यस्त किया है।

इस कृति में संयोग और वियोग श्रृंगार का मर्मस्पर्शी निदर्शन होता है। मानवीय मनोभावों की पृष्ठभूमि में यहाँ प्रकृति का संवेदनात्मक प्रदर्शन विशेष दर्शनीय है। प्रथम नाटक की तुलना में कवि की नाट्य कला यहाँ अधिक परिपक्व और विकसित दिखाई पड़ती है।

'अभिज्ञान शांकुतल' की कथा सुप्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा दुष्यंत और ऋषि कण्व की पोठय पुत्री शकुंतला के प्रेम और प्रणय की कथा है। दुष्यंत मृगया करते हुए कण्व मुनि के आश्रम जा पहुँचते हैं। वहाँ उपवन में वृक्ष सेचन करती शकुंतला को देखकर वे मुग्ध हो जाते हैं फिर दोनों गांधर्व विवाह में बंध जाते हैं। उसे शीघ्र हस्तिनापुर लिवा ले जाने की प्रतिज्ञा कर वे राजधानी लौट आते हैं। चलते समय पहचान चिन्ह् के तौर पर वह शकुंतला को एक अंगुठी पहना जाते हैं। कण्व ऋषि को इन घटनाओं का पता चलने पर वे शकुंतला को दुष्यंत के पास भेजते हैं। किसी कारणवश दुर्वासा के श्राप से वह अंगुठी खो जाती है जिसके कारण दुष्यंत शकुंतला को पहचानने से इन्कार कर देते हैं। अंततः उसकी माता मेनका अन्तःसत्वा शकुंतला को महर्षि मरीचि के आश्रम में रखती है और वहाँ भरत का जन्म होता है। अंततः दुष्यंत और शकुंतला का मिलन होता है।

"अभिज्ञान शाकुंतल" में कालिदास की नाट्य कला अपने चरम विकास को प्राप्त करती है। शकुंतला के मुग्ध मानस में प्रेम के प्रथम अंकुरण से लेकर चरम विकास तक का चित्रण जिस कौशल से किया गया है उसे कोई भी पाठक या प्रेक्षक प्रशंसा दिए बिना नहीं रह सकता। नाटक की उपस्थापन

शैली, वर्णन कौशल, संवादों की प्रस्तुति चरित्रों का सुसंगत विकास पाठक या प्रेक्षक को मंत्र मुग्ध कर देते हैं। सबसे अधिक मर्मस्पर्शी चित्रण शकुंतला की पति–गृह के लिए विदाई के प्रसंग का है, जिसमें न केवल महर्षि कण्व रोते हैं बल्कि उनके समस्त परिजन और आश्रमवासी रोते हैं। सभी मृग, गौएँ, पशु–पक्षी, लता–पौधे शोक में डूबे दिखाई पड़ते हैं। चतुर्थ अंक में आए इस वर्णन में कवि ने मनुष्य तथा प्रकृति इन दोनों के बीच अनुराग का रेशमी सूत्र चमका दिया है। पात्रों का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक एवं रससिद्ध बन पड़ा है। उनमें सहज रीति से मानवीय आदर्शों का प्रस्फूटन होता दिखाई पड़ता है। नाटक की रीति वैदर्मी है। वैदर्मी रीति के कालिदास आदर्श हैं। भास और शुद्रक की भाँति ही उन्होनें भाषा सरल रखी है किन्तु उसमें जो परिष्कार, प्रांजलता, प्रासादिकता, लालित्य और संगीत है वह अनुपम और अद्वितीय है। स्वयं कवि के पिछले नाटकों के साथ ही सम्पूर्ण संस्कृत नाट्य साहित्य में यह अतुलनीय है। व्यंजना प्रधान भाषा शैली में लिखा गया यह नाटक निपुण लोगों द्वारा गागर में सागर भरने वाला बताया जाता है। चुने संयत शब्द–प्रयोग और भाषा संक्षिप्ति में कवि को जो सफलता प्राप्त हुई है वह फिर किसी दूसरे कवि को प्राप्त नहीं हो सकी।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id :
ausheeroy.roy@gmail.com